11-12-2020

कानपुर जागरण

कानपुर, 11 दिसंबर, 2

एनएसआइ का फार्मूला तय करेगा गन्ने का मूल्य

एनएसआइ के निदेशक नरेंद्र मोहन • जागरण

जासं, कानपुर : देश में चीनी मिलों व गन्ना किसानों के बीच सीधा संबंध है। चीनी मिलों को अच्छा बाजार भाव मिलने पर किसानों को अतिरिक्त लाभ पहुंचता है। पिछले दो वर्षों से चीनी का उत्पादन सरप्लस है। गोदामों में स्टॉक पहले से ही है जबकि नई चीनी आने लगी है। ऐसे में राष्ट्रीय शर्करा संस्थान (एनएसआइ) तकनीक विकसित कर रहा है, जिससे मिलों को आर्थिक लाभ मिल सके और किसानों की आय भी दोगुनी हो जाए। गन्ने का मूल्य हर राज्य का अलग है। इसको एकरूपता में लाने के लिए खास तरह का फार्मूला तैयार किया गया है, जिसे उपभोक्ता मामले, खाद्य और सार्वजनिक वितरण मंत्रालय को भेजा जा चुका है। आइए जानते हैं संस्थान के निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन से, जिन्होंने चीनी उद्योग को पंख लगाने के लिए कई तरह की प्लानिंग की है। उनके साथ दैनिक जागरण की बातचीत के प्रस्तुत हैं प्रमुख अंश...

- **चीनी मिलों और किसानों को अतिरिक्त लाभ कैसे हो सकता है?**

- चीनी मिल और किसान एक ही सिक्के के पहलू हैं। चीनी मिलों को मुनाफा होता है तो किसानों को भी समय पर भुगतान हो जाता है। किसान अपने खेतों में गन्ने के साथ ही 16 अन्य तरह की फसलें उगा सकते हैं, जिनमें आलू, दलहन, तिलहन आदि शामिल हैं। करीब तीन साल पहले 70 टन प्रति हेक्टेयर गन्ने का उत्पादन हो रहा था, आज 80 से 85 टन प्रति हेक्टेयर पैदावार है। 10 से 15 फीसद बढ़ोतरी हुई है। इसी तरह से गन्ने से प्रति टन चीनी की मात्रा भी ज्यादा मिल रही है। अधिक उत्पादन होगा तो किसानों को भी ज्यादा मुनाफा मिलेगा।

- **एनएसआइ चीनी मिलों को किस तरह की तकनीक दे रहा है?**

- संस्थान चीनी मिलों को अन्य उत्पाद तैयार करने की तकनीक दे रहा है। कई तकनीक दी जा चुकी हैं, जिसमें गन्ने की बेकार खोई से इथेनॉल, हर्बल साबुन, कृत्रिम प्लास्टिक, बिस्कुट का उत्पादन आदि शामिल है। कोरोना के संक्रमण की शुरुआत में ही डब्ल्यूएचओ की गाइडलाइन के अनुरूप सैनिटाइजर बनाने का फार्मूला दिया गया। कई चीनी मिलें इसको बना रही हैं। शीरे से चाशनी बनाने के बाद बेकार बचे फिल्टर केक से बायो सीएनजी बनाने की तकनीक दी जा चुकी है।

समृद्धि

- चीनी मिलों को मिलेगा अतिरिक्त लाभ किसानों का होगा मुनाफा
- गन्ने के अवशेषों से बनाए जा रहे कई उत्पाद, स्टार्टअप की तैयारी

साप्ताह का साक्षात्कार

- **कोरोना काल में चीनी की खपत कम हो गई है, कैसे बढ़ाया जा सकता है?**

- केवल सफेद चीनी न बनाकर उसको फोर्टिफाइड करके विटामिन, मिनरल युक्त तैयार किया जा सकता है। गुड़ में दालचीनी, सोंठ, अदरक, हल्दी का इस्तेमाल कर इम्युनिटी बूस्टर के रूप में प्रयोग कर सकते हैं। फ्लेवरयुक्त चीनी भी तैयार की जा सकती है। कुछ चीनी मिलों ने इसको तैयार करना शुरू कर दिया है। विदेश में इसकी काफी मांग है।

- **क्या पर्यावरण संरक्षण की दिशा में भी शोध किए गए हैं?**

- एनएसआइ ने गन्ने की खोई से पार्टिकल बोर्ड तैयार किया है, जिसका उपयोग फर्नीचर बनाने में किया जाता है। यहां के विशेषज्ञों ने चीनी मिलों के लिए शोधित यंत्र बनाया है। इससे निकलने वाले अवशेष न सिर्फ नालियों में जाने से रुकेंगे बल्कि पानी को भी शोधित कर सिंचाई के काम में लाया जाएगा। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के निर्देश पर उत्तराखंड से पश्चिम बंगाल तक गंगा किनारे चीनी मिलों की मॉनीटरिंग की जा रही है। उनके यहां लगे शोधित प्लांटों की जांच की जा रही है। डिस्टलरी से निकलने वाली राख से जैविक खाद बनाई गई है। यह पोटेशियम युक्त रहेगी। इसकी फसलों की पैदावार बेहद आवश्यकता होती है।

- **कई देशों के साथ संस्थान की करार की क्या स्थिति है?**

- भारत चीनी उत्पादन में ब्राजील, थाईलैंड, चीन, ऑस्ट्रेलिया को टक्कर दे रहा है। यहां के उत्पादन में एनएसआइ की तकनीक का पूरा सहयोग रहता है। इसको जानते हुए नाइजीरिया और मिस्त्र के चीनी काउंसिल के साथ पिछले वर्ष करार हो चुका है। वहां के विशेषज्ञों को तकनीकी जानकारी दी जाएगी। चीनी मिलों को उच्चीकृत किया जाएगा। एनएसआइ के विशेषज्ञ इंडोनेशिया में रिसर्च इंस्टीट्यूट की स्थापना करेंगे। अभी इसका करार होना बाकी है।

- **स्टार्टअप और पेटेंट के लिए क्या किया जा रहा है?**

- छात्रों को स्टार्टअप के लिए बढ़ावा दिया जा रहा है। कुछ तकनीक उन्हीं द्वारा विकसित की गई है। संस्थान ने पेटेंट भी फाइल किए हैं। खोई से तैयार बिस्कुट की डिमांड आ रही है। इसमें विटामिन, मिनरल्स, फाइबर समेत अन्य तत्व हैं।

- **कोरोना वायरस के संक्रमण के समय शिक्षा की क्या व्यवस्था है?**

- ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों तरह से पढ़ाई जारी है। नौ तरह के डिप्लोमा कोर्स हैं, जिसमें तीन बैच की ऑफलाइन पढ़ाई हो रही है, जबकि बाकी ऑनलाइन पढ़ रहे हैं। कोर्स पूरा होने और परीक्षा के बाद दूसरे बैच को बुलाया जाएगा।

- **देश में किसी अन्य संस्थान के साथ मिलकर कार्य चल रहा है क्या?**

- कई संस्थानों के साथ मिलकर काम चल रहा है। यह सिर्फ गन्ना उद्योग तक ही सीमित नहीं है। संस्थान पेट्रोल में इथेनॉल की मात्रा बढ़ाने के लिए शोध कर रहा है। इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मेज रिसर्च, लुधियाना के साथ जल्द ही करार किया जाएगा।